नया नियम II

नया नियम II: पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ -

कक्षा #१:

I. पाठ्यक्रम का परिचय।
II. प्रेरितों के काम की पुस्तक।

कक्षा #२:

II. प्रेरितों के काम की पुस्तक। (जारी.)
III. पौलुस का जीवन।

कक्षा #३:

III. पौलुस का जीवन। (जारी.)
IV. रोमियों की पुस्तक।

कक्षा #४:

V. १ और २ कुरिन्थियों की पुस्तक।
VI. गलातियों की पुस्तक।

कक्षा #५:

VI. गलातियों की पुस्तक। (जारी.)
VII. १ और २ थिस्सलुनीकियों की पुस्तक।
परीक्षा।

टिप्पणियाँ —

नया नियम II: परीक्षा
संभावित २० अंकीय प्रश्न

१) व्याख्या करें कि कैसे प्रेरितों के काम १:८ सामर्थ्य, मृत्यु और सेवकाई के विचारों को जोड़ता है (पृष्ठ ३४९,३५०)।

२) लोगों के ऊपर पवित्र आत्मा के आने के प्रेरितों के कामों में चार अलग-अलग वृतांतों का उपयोग करते हुए, यह बताएँ कि कैसे "आत्मा द्वारा भरने के साक्ष्य" के विभिन्न प्रभाव थे (पृष्ठ ३५०-३५२)।

३) स्वतंत्रता और बाध्यता के बीच सम्बन्ध पर चर्चा करें जैसा कि गलातियों और अन्य सम्बंधित शास्त्रों की पुस्तक में लिखा किया गया है (पृष्ठ ३६७,३६८)।

संभावित १० अंकीय प्रश्न

१) प्रेरितों के काम के तीन प्रमुख विषयों की सूची बनाइए (पृष्ठ ३४८)।

२) पौलुस की पृष्ठभूमि का वर्णन करने के लिए दो पवित्रशास्त्रों का प्रयोग करें (पृष्ठ ३५८)।

३) पौलुस की सेवकाई की यात्राएँ कब आरम्भ हुई थीं (पृष्ठ ३५९)?

४) उन चार तरीकों की सूची बनाइए जिनमें पौलुस ने मसीह का वर्णन किया है। किसी शास्त्र का संदर्भ आवश्यक नहीं है (पृष्ठ ३५९,३६०)।

५) रोमियों ५:१-५ का प्रयोग करते हुए, उन चार चीज़ों की सूची बनाइए जो हमें धर्मी ठहराने के द्वारा प्राप्त होती हैं (पृष्ठ ३६४)।

६) उन तीन त्रुटियों की सूची बनाएँ जिन्हें पौलुस ने १ कुरिन्थियों (पृष्ठ ३६५,३६६) में ठीक करने का प्रयास किया था।

नया नियम II

I. पाठ्यक्रम की प्रस्तावना।

टिप्पणियाँ —

नए नियम के पाठ्यक्रमों की श्रृंखला:

पुराने नियम की श्रृंखला के पाठ्यक्रमों की तरह, हम तीन संक्षिप्त पाठ्यक्रमों की श्रृंखला में संपूर्ण नए नियम का अध्ययन नहीं कर सकते हैं। हमारा लक्ष्य नए नियम की सामग्री का सर्वेक्षण करना, उन्हें व्यवस्थित करना और सामान्य विषयों का अध्ययन करना है, साथ ही कुछ चयनित विशिष्ट विषयों का भी अध्ययन करना है।

इन तीन पाठ्यक्रमों को समाप्त करने के बाद, हमें N.T. की सामान्य समझ को संप्रेषित करने में सक्षम हो जाना चाहिए। हमें N.T. के कुछ विशिष्ट भागों और विषयों के बारे में गहरे स्तर पर संवाद करने में सक्षम हो जाना चाहिए।

हमारा लक्ष्य आगे N.T. अर्थात नए नियम की एक संपूर्ण इकाई के रूप में और अलग-अलग भागों के रूप में, नए नियम की २७ पुस्तकों के लिए समझ का एक रूपरेखा स्थापित करके अध्ययन करना है।

नए नियम के तीन पाठ्यक्रम:

नया नियम I: सुसमाचार और यीशु मसीह। इसमें मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना शामिल हैं।

नया नियम II: कलीसिया का जन्म। इसमें प्रेरितों के काम, रोमियों, १ और २ कुरिन्थियों, गलातियों और १ और २ थिस्सलुनीकियों को शामिल किया गया है।

नया नियम III: कलीसिया की बढ़ोतरी। इसमें कैद में लिखी हुई पत्री, चरवाही के लिए पत्री, सामान्य पत्री और इब्रानियों शामिल हैं।

पाठ्यक्रमों को एक श्रृंखला के रूप में विकसित किया गया है। यदि आप पहले पाठ्यक्रम को समाप्त नहीं करते हैं, तो पाठ्यक्रम # २ से शुरू करें जहाँ से आपने पाठ्यक्रम #१ को छोड़ा था। पाठ्यक्रम #३ शुरू करने के लिए भी ऐसा ही है (इस कारण पाठ्यक्रम #३ में कम सामग्री है क्योंकि पहले पाठ्यक्रमों का कुछ "भाग" इसमें है)।

टिप्पणियाँ –

क. इस पाठ्यक्रम के विषय।

१. यह पाठ्यक्रम नए नियम की कलीसिया के जन्म पर केंद्रित है।

२. इसमें निम्नलिखित पुस्तकें शामिल हैं:

क. प्रेरितों के काम।

ख. रोमियों।

ग. १ और २ कुरिन्थियों।

घ. गलातियों।

ङ. १ और २ थिस्सलुनीकियों।

३. इसमें पौलुस के जीवन का एक अध्ययन भी शामिल किया गया है।

II. प्रेरितों के काम की पुस्तक।

क. पुस्तक का शीर्षक।

१. मूल रूप से, प्रेरितों के काम की पुस्तक लूका के लेखन का दूसरा खंड थी। यह लूका के सुसमाचार से जुड़ा था।

२. दूसरी शताब्दी ई. में, दूसरे खंड को एक अलग पुस्तक के रूप में पहचाना जाने लगा (यह मान्य है क्योंकि लूका ने स्वयं दोनों पुस्तकों के बीच एक अंतर को दर्शाया है: प्रेरितों के काम १:१ को देखें)।

क. उस समय इस पुस्तक को नामित करने के लिए "प्रेरितों के काम" शीर्षक का उपयोग किया जाने लगा।

ख. यह पुस्तक मुख्य रूप से दो प्रेरितों (पतरस और पौलुस) की ओर इशारा करती है। "पतरस और पौलुस के काम" एक अधिक उपयुक्त शीर्षक हो सकता है।

टिप्पणियाँ –

ग. इससे भी अधिक उपयुक्त शीर्षक "पवित्र आत्मा के काम" हो सकता है। इस पुस्तक का केंद्र बिंदु कलीसिया के प्रभाव और विकास को बढ़ाने में उनकी उपस्थिति और कार्य है।

१) हम एक और संभावित शीर्षक बता सकते हैं जो पुस्तक के विषय के लिए उपयुक्त प्रतीत होता है:

"पवित्र आत्मा के सामर्थ्य द्वारा कलीसिया के माध्यम से यीशु की सेवकाई की निरंतरता और उसका विस्तार।"

२) लूका के सुसमाचार में हम पृथ्वी पर यीशु की सेवकाई को देख सकते हैं। दूसरे खंड में, प्रेरितों के काम की पुस्तक में, हम पृथ्वी पर यीशु के लोगों द्वारा उसकी सेवकाई को देख सकते हैं।

ख. प्रेरितों के काम का लेखक

१. लूका जो वैद्य थे, को सामान्यतः प्रेरितों के काम के लेखक के रूप में माना जाता है।

२. लूका - प्रेरितों के काम को स्पष्ट रूप से एक ही लेखक के द्वारा लिखा गया है (लूका १:१-४ और प्रेरितों के काम १:१)।

३. प्रेरितों के काम के लेखक के रूप में लूका, पौलुस के घनिष्ठ मित्र थे (देखें १६:१०-१७; २०:५-२१:१८; २७:१-२८:१६ जहाँ लेखक "हम" का प्रयोग करते हैं)।

४. परंपरा यह भी कहती है कि लूका लेखक थे।

ग. प्रेरितों के काम की पुस्तक के मुख्य पहलू।

१. प्रेरितों के काम में पाए जाने वाले मुख्य शब्द।

क. पवित्र आत्मा।

ख. पतरस (अध्याय १-१२) ।

ग. पौलुस (अध्याय १३-२८) ।

घ. कलीसिया।

ङ. यहूदी।

च. अन्यजातियाँ।

टिप्पणियाँ —

छ. अन्य भाषा।

ज. संगति/सहभागिता (कोइनोनिया)।

झ. गवाह।

२. प्रेरितों के काम में पाए जाने वाले मुख्य विचार।

क. सताव

ख. सुसमाचार का प्रचार।

ग. कलीसिया की वृद्धि और बढ़ोतरी।

३. प्रेरितों के काम में मुख्य वाक्यांश - "उनकी संख्या में जोड़ा गया।"

४. प्रेरितों के काम में मुख्य पद - प्रेरितों के काम १:८, "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर उतरेगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम, और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह ठहरोगे" (१:८)।

५. प्रेरितों के काम में पाए जाने वाले तीन मुख्य विषय।

क. पवित्र आत्मा की सामर्थ्य।

ख. सुसमाचार का प्रचार।

ग. कलीसिया का विकास (इस विषय के गहन अध्ययन के लिए चर्च ग्रोथ नामक MOTMOT अर्थात मोटमोट पाठ्यक्रम देखें।

घ. विषय #१: पवित्र आत्मा की सामर्थ्य।

१. पवित्र आत्मा को इसलिए भेजा गया ताकि विश्वासी जन उससे सामर्थ्य को प्राप्त कर सकें।

२. प्रेरितों के काम १:८ में यीशु ने स्पष्ट रूप से कहा, कि पवित्र आत्मा को इसलिए भेजा गया था ताकि विश्वासियों के पास "सामर्थ्य" हो (यूनानी शब्द "डुनामिस" है जिससे हमें अपना शब्द "डायनामाइट" मिलता है)।

टिप्पणियाँ

लेखक की टिप्पणी:

जब हम पवित्र आत्मा के "बपतिस्मा" या "भरने" के विषय में पढ़ाते और सेवा करते हैं, तो हमें सामर्थ्य की इस आधारभूत समझ को अपने दृष्टिकोण के बीच में रखना चाहिए। हमें किसी व्यक्तिगत सिद्धांत पर नहीं, बल्कि केवल सामर्थ्य प्राप्त करने के विचार पर बल देना चाहिए।

वाइनयार्ड फैलोशिप के संस्थापक जॉन विम्बर इसका हमें एक अच्छा उदाहरण देते हैं। वह कहते हैं कि जब वह पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के बारे में सेवकाई करते हैं तो उनका ध्यान अन्य बिंदुओं पर केंद्रित नहीं होता, बल्कि वह लोगों से पूछते हैं कि क्या वे अपने जीवन और सेवकाई में अधिक सामर्थ्य को प्राप्त करना चाहते हैं।

हम विभाजनकारी या आक्रामक नहीं होना चाहते। हम केवल पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर की सामर्थ्य की पूर्णता में चलना चाहते हैं।

३. पवित्र आत्मा की सामर्थ्य का उद्देश्य और परिणाम।

क. प्रेरितों के काम १:८ में, यीशु ने पवित्र आत्मा की सामर्थ्य और कलीसिया के गवाह के बीच एक स्पष्ट सम्बन्ध बनाया (लूका २४:४८,४९ पर भी विचार करें)। हम यह कह सकते हैं कि आत्मा की सामर्थ्य राष्ट्रों के बीच सेवकाई से जुड़ी हुई है (देखें लूका २४:४७-४९)।

ख. "गवाह" शब्द ग्रीक शब्द "मार्टुरियन" का अनुवाद है। "मार्टुरियन" से हमें अंग्रेजी शब्द "शहीद (martyr अर्थात मार्टयर)" मिलता है। "शहीद (martyr अर्थात मार्टयर)" का मूलभूत विचार "जो देखा गया और जिसकी गवाही दी गई है, उसके लिए मरने के लिए तैयार रहना" है।

१) इस प्रकार, हम बाइबल के एक सम्बन्ध को देखते हैं जो पवित्र आत्मा को भेजने और प्राप्त करने का आधार है। पूरी बाइबल में हम देखते हैं कि सामर्थ्य और मृत्यु आपस में सम्बंधित हैं।

क) सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है (२कुरिन्थियों १२:९)।

ख) जीवन मृत्यु से जुड़ा है (मत्ती १६:२४,२५; यूहन्ना १२:२४,२५)।

ग) सामर्थ्य यातनाओं से जुड़ी है (२तीमुथियुस १:८)।

टिप्पणियाँ —

२) हम देखते हैं कि आत्मा इसलिए भेजा गया ताकि हम सामर्थ्य को प्राप्त कर सकें। यह सामर्थ्य हमें स्वयं के लिए मरने में सक्षम बनाती है ताकि हम मसीह के लिए गवाही दे सकें (यह मृत्यु आत्मिक है, लेकिन शारीरिक भी हो सकती है)।

क) गवाह होने का अर्थ, यीशु मसीह के पुनरुत्थान का प्रचार करना था।

ख) प्रेरितों के काम में, गवाह का विचार अकसर प्रत्यक्ष रूप से पुनरुत्थान को देखने और सुनने से जुड़ा था ।

ग. जब प्रेरितों के काम में पवित्र आत्मा उतरा, तब क्या हुआ?

चर्चा का बिंदु

प्रेरितों के काम में पवित्र आत्मा के उतरने के विवरणों का अध्ययन और चर्चा करने के लिए निम्नलिखित अनुभाग का उपयोग करें।
आपको यह देखकर आश्चर्य हो सकता है कि जब पवित्र आत्मा लोगों पर "उतारा" गया तो बहुत सी बातें हुईं।
बाइबल के अनुसार, यह कहना कठिन है कि कोई एक विशिष्ट बात आत्मा के "भरने" का निर्णायक संकेत या प्रमाण हो सकता है।

१) पिन्तेकुस्त का दिन (प्रेरितों के काम २)।

क) अन्य भाषा (प्रेरितों के काम २:४)।

ख) प्रचार करना (प्रेरितों के काम २:१४-३६; ३:११-२६)।

ग) वे चीजें जो "देखी और सुनी" दोनों गयीं थीं (प्रेरितों के काम २:३३)।

घ) आत्माओं को बचाया गया था (प्रेरितों के काम २:४१,४७)।

ङ) प्रार्थना, संगति (सहभागिता), अध्ययन, और रोटी तोड़ने (आराधना) का अभ्यास किया गया था (प्रेरितों के काम २:४२)।

च) चिन्ह और चमत्कार (प्रेरितों के काम २:४३)।

छ) सहभागिता (प्रेरितों के काम २:४४-४६)।

ज) स्तुति (प्रेरितों २:४७)।

झ) चंगाई (प्रेरितों के काम ३:१-१०)।

टिप्पणियाँ –

२) दूसरी बार हिलाया जाना (प्रेरितों के काम ४:३१)।

क) साहस (प्रेरितों के काम ४:३१)।

ख) साझा करना (प्रेरितों के काम ४:३२-३५)।

ग) गवाही या प्रचार करना (प्रेरितों के काम ४:३३)।

घ) एक आत्मिक वरदान: ज्ञान का वचन (प्रेरितों के काम ५:३)।

ङ) चिन्ह और चमत्कार (प्रेरितों के काम ५:१२)।

च) एकता (प्रेरितों के काम ५:१२)।

छ) आत्माओं को बचाया गया (प्रेरितों के काम ५:१४)।

ज) चंगाई और छुटकारा (प्रेरितों के काम ५:१६)।

३) सामरियों का वर्णन (प्रेरितों के काम ८)।

क) वे चीजें जो शमौन द्वारा "देखी गई" थीं (प्रेरितों के काम ८:१८)।

ख) हाथों का रखना।

४) पौलुस का परिवर्तन (प्रेरितों के काम ९)।

क) चंगाई: पौलुस की आँखें खुल गई (९:१८)।

ख) वहाँ प्रचार हुआ (९:२०)।

ग) ज्ञान के वचन का आत्मिक वरदान था (९:२२)।

घ) साहस (९:२७,२८)।

५) कुरनेलियुस का वर्णन (प्रेरितों १०)।

क) अन्य भाषा (१०:४६)।

ख) परमेश्वर की स्तुति और बड़ाई (१०:४६)।

टिप्पणियाँ –

६) तीसरी बार भरा जाना (निरंतर) (प्रेरितों के काम १३:५२)।

क) प्रचार (१४:१,७)।

ख) आत्मिक वरदानों के संभावित संदर्भ: ज्ञान का शब्द (प्रेरितों के काम १४:१-- :ऐसी बातें की"), और ज्ञान का शब्द (प्रेरितों के काम १४:६ – "वे इस बात को जान गये")।

ग) साहस (१४:३)।

घ) चिन्ह और चमत्कार (१४:३)

ङ) चंगाई (१४:१०)।

७) इफिसुस का वर्णन (प्रेरितों १९)।

क) अन्य भाषा (१९:६)।

ख) भविष्यद्वाणी (१९:६)।

ग) हाथों का रखा जाना।

टिप्पणियाँ –

प्रेरितों के काम २:३८ के संबंध में लेखक की टिप्पणी

प्रेरितों के काम २:३८ मसीही शुरुआत और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के बारे में तीन गुना नींव प्रस्तुत करता है:

१) पश्चाताप

२) बपतिस्मा लें (पानी में)।

३) तुम पवित्र आत्मा का वरदान पाओगे।

ऐसा लगता है कि वरदान को प्राप्त करना एक "दूसरा अनुभव" है, जिसका अर्थ यह है कि आत्मा का वरदान उद्धार के बाद आता है।

प्रेरितों के काम अध्याय २ का वर्णन पवित्र आत्मा के सम्बन्ध में एक "दूसरे अनुभव" की स्थिति को भी प्रस्तुत करता है (देखें यूहन्ना २०:२२)।

हालाँकि, प्रेरितों के काम ४:३१ और १३:५२ वृत्तांत यह दिखाते हैं कि यह एक अकेला "दूसरा अनुभव" नहीं है, बल्कि निरंतर भरना है (देखें इफिसियों ५:१८; यूहन्ना ७:३७)।

निम्नलिखित वर्णन "दूसरे अनुभव" के विचार का समर्थन करते हैं: प्रेरितों के काम २:१-२१, प्रेरितों के काम ८:१४-२०, प्रेरितों के काम ९:१०-१९, प्रेरितों के काम १०:४४-४८, प्रेरितों के काम १९:१-६।

प्रेरितों के काम १०:४४-४८ में पश्चाताप और आत्मा का स्वागत एक साथ होता हुआ प्रतीत होता है, लेकिन हम बाद में पढ़ते हैं कि वरदान उनके विश्वास करने के बाद दिया गया था (देखें प्रेरितों ११:१७)। साथ ही, ध्यान दें कि पानी का बपतिस्मा प्रेरितों के काम ९ और प्रेरितों के काम १० दोनों में आत्मा के वरदान के बाद आया था, लेकिन पश्चाताप हमेशा पहले आया था।

नया नियम II

टिप्पणियाँ

चर्चा का बिंदु

पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के आगमन के वृत्तांतों की सूची को सारांशित करने के लिए निम्नलिखित चार्ट का उपयोग करें।
आपको इस अध्ययन से क्या निष्कर्ष मिले?
हमें पवित्र आत्मा के भरने के "साक्ष्य" के विचार को कैसे समझना चाहिए?

वर्णन	चंगाई	प्रचार	अन्य भाषा	चिन्ह और चमत्कार	साहस	सहभागिता/ साझा करना	स्तुति	आत्मिक वरदान	आत्माओं का बचाया जाना	भविष्य-द्वाणी	अनुशासन	देखा/ सुना गया	हाथों का रखा जाना
प्रेरितों के काम २	X	X	X	X		X	X		X		X	X	
प्रेरितों के काम ४:३१	X	X		X	X	X		X	X				
प्रेरितों के काम ८												X	X
प्रेरितों के काम ९	X	X			X			X					
प्रेरितों के काम १०			X				X						
प्रेरितों के काम १३:५२	X	X		X	X			X					
प्रेरितों के काम १९			X							X			X
कुल	४	४	३	३	३	२	२	३	२	१	१	२	२

***ध्यान दें: हाथ रखना आत्मा के उतरने के प्रभावों या परिणामों में से एक नहीं है (जैसा कि बाकी सभी हैं), लेकिन यह इसलिए दिखाया गया है कि कभी-कभी इसका उपयोग पवित्र आत्मा का वरदान प्राप्त करने की एक विधि के रूप में किया जाता था और कभी-कभी ऐसा नहीं भी होता था।

***ध्यान दें: "कुल" दर्शाता है कि पवित्र आत्मा के भरने के विभिन्न महत्वपूर्ण प्रभाव, परिणाम, संकेत, प्रमाण या "साक्ष्य" हैं। सभी वर्णनों में कोई भी प्रभाव दिखाई नहीं देता है और न ही एक "साक्ष्य" बाकी के ऊपर आता है।

चर्चा का बिंदु

इस अध्ययन से क्या निष्कर्ष मिले? हमें पवित्र आत्मा के भरने के "साक्ष्य" के विचार को कैसे समझना चाहिए?

टिप्पणियाँ —

ग. विषय #२: प्रेरितों के काम में सुसमाचार का प्रचार।

लेखक का उदाहरण:

प्रेरितों के काम की पुस्तक के दो प्रमुख विषय, पवित्र आत्मा की सामर्थ्य और सुसमाचार का प्रचार, पंखे और हवा के संचलन की तरह एक साथ चलते हैं। एक पंखे का उद्देश्य हवा को फैलाना है। आत्मा की सामर्थ्य का उद्देश्य सुसमाचार का प्रचार करना है।

अपना उदाहरण लिखें:

लेखक की टिप्पणी:

सुसमाचार का प्रचार समाज के सभी स्तरों और सभी स्थानों पर होना चाहिए। प्रेरितों के काम १:८ के अनुसार, सुसमाचार को यरूशलेम, यहूदिया और सामरिया और पृथ्वी की छोर तक फैलाया जाना था। इसका अर्थ यह था कि सुसमाचार को स्थानीय समुदाय में, आसपास के प्रांतों में और दूर के स्थानों में भी फैलाया जाना था।

१. यरूशलेम में सुसमाचार का प्रचार (प्रेरितों के काम १-७)।

क. यह किसी कीमत पर किया गया था। जेल के विभिन्न अनुभवों (प्रेरितों के काम अध्याय ४,५) और स्तिफनुस की मृत्यु (प्रेरितों के काम ७) के द्वारा हम बहुत अधिक उत्पीड़न को देख सकते हैं।

ख. इस समय, कलीसिया ने एक भवन या व्यवस्था के रूप में अधिक विकास करना शुरू कर दिया था (प्रेरितों के काम अध्याय ६ में सेवकों की नियुक्ति पर ध्यान दें)।

टिप्पणियाँ —

२. यहूदिया और सामरिया में सुसमाचार का प्रचार (प्रेरितों के काम अध्याय ८,९)।

क. सामरिया में फिलिप्पुस (प्रेरितों के काम अध्याय ८)। ध्यान दें: आरंभिक कलीसिया के इस चरण में अफ्रीकी मसीही विश्वास की जड़ें हैं (इथियोपियाई खोजे के वर्णन पर ध्यान दें)।

ख. दमिश्क में पौलुस (प्रेरितों के काम ९:१९-३१)।

ग. पतरस की सेवकाई (प्रेरितों के काम ९:३२-४३)।

३. पृथ्वी की छोर तक सुसमाचार का प्रचार (प्रेरितों के काम १०-२८)।

क. कैसरिया के लिए (प्रेरितों के काम अध्याय १०)।

ख. अन्ताकिया को (प्रेरितों के काम ११:१९)। ध्यान दें कि यह क्लेश का परिणाम था।

ग. एशिया माइनर तक (पौलुस की पहली सेवकाई यात्रा)।

१) साइप्रस (प्रेरितों के काम १३:५-१३)।

२) पिरगा (प्रेरितों के काम १३:१३)।

३) अन्ताकिया पिसिदिया (प्रेरितों के काम १३:१४)।

४) इकुनियुम (प्रेरितों के काम १३:५१)।

५) लुस्त्रा और दिरबे (प्रेरितों के काम १४:६)

घ. एशिया माइनर और यूनान तक (पौलुस की दूसरी सेवकाई यात्रा)।

१) सीरिया और किलिकिया (प्रेरितों के काम १५:४१)।

२) लुस्त्रा (प्रेरितों के काम १६:१)।

३) फ्रूगिया और गलातिया (प्रेरितों के काम १६:६)।

४) त्रोआस (प्रेरितों के काम १६:८)।

५) फिलिप्पी (प्रेरितों के काम १६:१२)।

६) थिस्सलुनीके और बिरीया (प्रेरितों के काम १७:१,१०)।

टिप्पणियाँ —

७) एथेंस और कुरिन्थुस (प्रेरितों के काम १७:१६ और १८:१)।

८) इफिसुस (प्रेरितों के काम १८:१९)।

घ. फिर से एशिया माइनर और यूनान में (पौलुस की तीसरी सेवकाई यात्रा)।

१) गलातियों (प्रेरितों के काम १८:२३)।

२) इफिसुस (प्रेरितों के काम १९:१)।

३) यूनान (प्रेरितों के काम २०:२)।

४) त्रोआस (प्रेरितों के काम २०:६-१२)।

५) सोर (प्रेरितों के काम २१:१-४)।

६) कैसरिया (प्रेरितों के काम २१:८)।

ङ. रोम के लिए (पौलुस की कैद के द्वारा)।

१) पौलुस ने कई प्रभावशाली लोगों जैसे फेलिक्स और अग्रिप्पा, आदि के सामने गवाही दी (देखें प्रेरितों के काम २६:१८)।

२) परमेश्वर ने रोम में सुसमाचार को फ़ैलाने के लिए पौलुस की कैद का ईश्वरीय रूप से उपयोग किया (देखें प्रेरितों के काम २६:३२)।

च. स्पेन के लिए (परंपरा कहती है कि पौलुस स्पेन गया था) (देखें रोमियों १५:२४,२८)।

चर्चा का बिंदु

यह दिखाने के लिए कि नए नियम की कलीसिया ने प्रेरितों के काम १:८ की आज्ञा के प्रति कैसी प्रतिक्रिया दी, निम्नलिखित शास्त्रों का उपयोग करें। देखें कि कैसे सुसमाचार यरूशलेम से पृथ्वी के ज्ञात छोर तक फैलाया गया था। आज हम अपने विषय में क्या कहेंगे? क्या हम प्रेरितों के काम १:८ की आज्ञा का पालन कर रहे हैं? क्या हमें भी प्रतिक्रया देनी चाहिए?

प्रेरितों के काम ५:२८; प्रेरितों के काम ६:७; प्रेरितों के काम ८:१; प्रेरितों के काम ८:१४; प्रेरितों के काम ९:३१; प्रेरितों के काम १३:४७; प्रेरितों के काम १५:१३; प्रेरितों के काम १७:६; और प्रेरितों के काम २४:५।

टिप्पणियाँ —

III. पौलुस का जीवन।

क. पौलुस के जीवन में होने वाली प्रमुख घटनाएँ (पौलुस के जीवन और सेवकाई का सामान्य अध्ययन करने के लिए इस रूपरेखा का उपयोग करें)।

१. उनकी पृष्ठभूमि।

क. वह एक फरीसी थे (प्रेरितों के काम २३:६)।

ख. वह रोम के एक नागरिक थे (प्रेरितों के काम २२:२५-२८)।

ग. उनका जन्म तरसुस में हुआ था (प्रेरितों के काम २२:३)।

घ. उन्होंने गमलीएल के अधीन होकर शिक्षा प्राप्त की (प्रेरितों के काम २२:३)।

ङ. उन्होंने तंबू बनाना सीखा (प्रेरितों के काम १८:३)।

२. उनके परिवर्तन से पहले।

क. उन्होंने कलीसिया को सताया (प्रेरितों के काम ९:१-३; २२:४)। उसने स्तिफनुस के हत्यारों के कपड़ों की रखवाली की (प्रेरितों के काम ७:५८)।

ख. उन्होंने व्यवस्था का पालन किया (प्रेरितों के काम २६:५)।

३. उनका परिवर्तन।

क. दमिश्क के पास उन्होंने एक तेज़ ज्योति देखी और वह अन्धे हो गये (प्रेरितों के काम ९:३; २२:६; ९:८)।

ख. मसीह ने उन्हें डांटा और उन्होंने उत्तर दिया (प्रेरितों के काम २२:७,८; ९:६)।

ग. उन्हें दमिश्क ले जाया गया जहाँ उन्होंने उपवास और प्रार्थना की (प्रेरितों २२:११; ९:९-११)।

घ. हनन्याह को उनके पास भेजा गया और उन्होंने बपतिस्मा लिया (प्रेरितों के काम ९:११,१२,१८)।

टिप्पणियाँ –

४. उनके परिवर्तन के बाद।

क. उन्होंने दमिश्क में प्रचार किया और फिर अरब चले गये (प्रेरितों के काम ९:२०; गलातियों १:१७)।

ख. वह दमिश्क को वापस लौट आये और फिर यरूशलेम गये (गलातियों १:१७,१८)।

ग. कलीसिया ने उन पर संदेह किया, यहूदियों ने उन्हें सताया, और बरनबास उनके मित्र बन गये (प्रेरितों के काम ९:२६-२९)।

घ. बरनबास उन्हें अन्ताकिया ले आये जहाँ उन्होंने एक वर्ष तक शिक्षा दी (प्रेरितों के काम ११:२५,२६)।

५. पहली, दूसरी और तीसरी सेवकाई यात्राएँ।

क. यह यात्राएँ ४७-५७ ई. के बीच हुईं।

ख. एक सामान्य रूपरेखा के लिए पिछला भाग (पृथ्वी की छोर तक सुसमाचार का प्रचार) देखें।

६. यरूशलेम, कैसरिया और रोम में (कैद)।

क. कलीसिया ने उन्हें ग्रहण किया परन्तु यहूदियों और रोमियों ने उन्हें कैद कर लिया (प्रेरितों के काम २१:१७,२७; २२:२४-२९)।

ख. उन्हें कैसरिया ले जाया गया जहाँ उन्होंने दो वर्ष जेल में बिताए (प्रेरितों २३:२३-३३; २४:२७)।

ग. उन्होंने फेलिक्स और राजा अग्रिप्पा के सामने अपना प्रत्युत्तर दिया (प्रेरितों के काम २४:१०-२१; २६:१-२९)।

घ. उन्हें रोम ले जाया गया जहाँ उन्होंने प्रचार किया और घर में नज़रबंद होने के दौरान पत्र लिखे (प्रेरितों के काम २७:१४-४४; २८:१६,३०,३१)।

ख. वे तरीके जिससे पौलुस ने मसीह का वर्णन किया।

१. शांतिदूत (रोमियों ५:१)।

२. महिमा का प्रभु (१ कुरिन्थियों २:८)।

३. एकमात्र नींव (१ कुरिन्थियों ३:११)।

टिप्पणियाँ –

४. बलि का मेमना (१ कुरिन्थियों ५:७)।

५. मृत्यु पर विजय पाने वाले (१ कुरिन्थियों १५:२४-२६)।

६. परमेश्वर के प्रतिरूप (२ कुरिन्थियों ४:४)।

७. मुक्तिदाता (गलातियों ५:१)।

८. परिपक्वता का लक्ष्य या मानक (इफिसियों ४:१३)।

९. एक विश्वासी के अंतिम प्रतिफल (फिलिप्पियों ३:८)।

१०. कलीसिया का सिर (कुलुस्सियों १:१८)।

११. आने वाले प्रभु (१ थिस्सलुनीकियों ४:१६)।

१२. धन्य और एकमात्र प्रभु जो राजाओं का राजा और प्रभुओं के प्रभु हैं (१ तीमुथियुस ६:१५)।

१३. सब मनुष्यों के न्यायी (२ तीमुथियुस ४:१)।

१४. छुड़ानेवाले (तीतुस २:१४)।

१५. उद्धार के लेखक (इब्रानियों २:१०)।

१६. महान महायाजक (इब्रानियों ४:१४)।

१७. विश्वास के लेखक और सिद्ध करने वाले (इब्रानियों १२:२)।

कक्षा में होने वाली चर्चा:

पौलुस के जीवन पर ऊपर दिए गये अध्ययन का उपयोग करते हुए, निम्नलिखित बातों पर चर्चा करें:

१) उनके स्वयं के अनुभवों के आधार पर, आपको क्या लगता है कि प्रभु के साथ आज्ञाकारी रूप से चलने के लिए पौलुस शिक्षा, सामाजिक, राजनीतिक स्थिति, या धार्मिक गतिविधि को कितना महत्व देंगे?

२) उनके स्वयं के अनुभवों के आधार पर, आपको क्या लगता है कि पौलुस साहस, क्षतिग्रस्त, धीरज और आत्मरक्षा को कितना महत्व देंगे?

३) मसीह के बारे में उसकी समझ के आधार पर, आपको क्या लगता है कि पौलुस किसी व्यक्ति की यीशु के बारे में धारणा की तुलना उनकी स्वयं की धारणा के विपरीत कैसे करेगा?

टिप्पणियाँ —

IV. रोमियों की पुस्तक।

क. रोमियों की एक सामान्य रूपरेखा।

१. सिद्धांत (रोमियों अध्याय १-११)। इस पुस्तक का मुख्य विषय उद्धार की योजना है जिसमें विश्वास के द्वारा धर्मी और पवित्र आत्मा के कार्य द्वारा पवित्रीकरण शामिल है।

२. अनुप्रयोग (रोमियों अध्याय १२-१६) - मसीही ज़िम्मेदारियों के बारे में तरह-तरह के परामर्श दिए गये हैं।

ख. रोमियों की पुस्तक की विस्तृत रूपरेखा (रोमियों की पुस्तक का सामान्य अध्ययन करने के लिए इस रूपरेखा का उपयोग करें)।

१. उद्धार की योजना (रोमियों अध्याय १--११)।

क. पत्री का परिचय (रोमियों १:१-१७)।

ख. परमेश्वर और मनुष्य के बीच सम्बन्ध स्थापित करने की कुंजी धार्मिकता है (रोमियों १:१८-८:३९)।

१) जब मनुष्य परमेश्वर के सामने खड़ा होता है,तब धार्मिकता उसकी आवश्यक स्थिति होती है (रोमियों १:१८-५:२१)।

क) मनुष्य की असफलता (रोमियों १:१८-३:२०)।

ख) विश्वास की विजय (रोमियों ३:२१-३१)।

ग) अब्राहम का उदाहरण (रोमियों ४:१-२५)।

घ) धर्मी होने के परिणाम (रोमियों ५:१-२१)।

२) जब मनुष्य परमेश्वर के सामने खड़ा होता है तो धार्मिकता जीवन का आवश्यक तरीका होता है (रोमियों ६:१-८:३९)।

क) अनुग्रह से पाप की पुष्टि नहीं होती (रोमियों ६:१-१४)।

ख) अनुग्रह की सामर्थ्य (रोमियों ६:१५-७:६)।

ग) पाप के विरुद्ध संघर्ष (रोमियों ७:७-२५)।

घ) आत्मा के द्वारा विजय (रोमियों ८:१-३९)।

टिप्पणियाँ —

ग. परमेश्वर की योजना में इस्राएल और अन्यजातियाँ (रोमियों ९:१-११:३६)।

१) पौलुस की इस्राएल के प्रति चिंता (रोमियों ९:१-५)।

२) इस्राएल और सभी लोगों के सम्बन्ध में परमेश्वर की ईश्वरीयता और न्याय (रोमियों ९:६-२९)।

३) इस्राएल की विफलता/अन्यजातियों की सफलता (रोमियों ९:३०-१०:२१)।

४) इस्राएल की वर्तमान स्थिति (रोमियों ११:१-१०)।

५) इस्राएल की भविष्य की स्थिति (रोमियों ११:११-३६)।

६) इस्राएल का उद्धार और परमेश्वर की दया और महानता (रोमियों ११:२५-३६)।

२. उद्धार के जीवन के व्यावहारिक अनुप्रयोग (रोमियों अध्याय १२-१६)।

क. व्यवहार और कार्यों के लिए मसीही मानक (रोमियों १२:१-१५:१३)।

१) प्रतिबद्धता और समर्पण (रोमियों १२:१,२)।

२) वरदानों का उपयोग (रोमियों १२:३-८)।

३) मसीही चरित्र में निर्देश और परामर्श (रोमियों १२:९-२१)।

४) अधिकार के प्रति प्रतिक्रिया (रोमियों १३:१-१४)।

५) दूसरों के प्रति एकता और संवेदनशीलता (रोमियों १४:१-१५:१३)।

ख. व्यक्तिगत विवरण, अनुरोध, सिफारिशें, चेतावनियाँ, और अभिवादन (रोमियों १५:१४-१६:२७)।

टिप्पणियाँ —

ग. रोमियों में पाए जाने वाले प्रमुख पद।

१. विचार करें कि कैसे रोमियों १:१६ और रोमियों ५:१ को रोमियों की पुस्तक के मुख्य पद कहा जा सकता है।

२. विचार करें कि रोमियों के विषय का एक संक्षिप्त सारांश देने के लिए निम्नलिखित पदों का उपयोग कैसे किया जा सकता है।

क. रोमियों १:१६

ख. रोमियों ३:२२,२३,२८

ग. रोमियों ४:३

घ. रोमियों ५:१,१८

ङ. रोमियों ९:३१,३२

च. रोमियों १०:३-९

घ. रोमियों में मुख्य विषय या संदेश।

१. रोमियों का संदेश एक निराशाजनक रूप से पतित संसार के बीच में आशा का संदेश है।

२. निम्नलिखित बिंदु दर्शाते हैं कि कैसे रोमियों इस विषय पर बल देता है।

क. दोष।

१) दोष की वजह से परमेश्वर और मनुष्य के बीच अलगाव होता है (रोमियों१:१८-३:२०)।

२) विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराने जाने में आशा होती है (रोमियों ५:१)।

ख. हमारा पापी स्वभाव।

१) पापी स्वभाव के कारण परमेश्वर और हमारे बीच अलगाव आता है (रोमियों ७:१५-२४)।

२) पुनर्जनन में आशा होती है (रोमियों ८:१-४)।

टिप्पणियाँ —

ग. परमेश्वर का ईश्वरीय चुनाव।

१) परमेश्वर का ईश्वरीय चुनाव, परमेश्वर और मनुष्य दोनों के बीच अलगाव की एक बड़ी दीवार खड़ी करता है (रोमियों ९:७-१८)।

२) जब हम उसके नाम को पुकारते हैं, तब उस सामान्य अवसर में आशा पाई जाती है (रोमियों १०:११-१३)।

ङ. विश्वास द्वारा धर्मी (रोमियों ५:१-५)।

१. रोमियों ५:१ की प्रस्तावना को देखें: "सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे..."

२. धर्मी या मेल-मिलाप के द्वारा हमारे पास ऐसा क्या है?

क. हमारे पास शान्ति है (पद १)।

ख. हम अनुग्रह प्राप्त कर सकते हैं (पद २) ।

ग. हमें आशा में आनन्द है (पद २)।

घ. हमें क्लेश में आनन्द मिलता है (पद ३)।

ङ. हमारे पास धीरज है (पद ३,४)।

च. हमारा चरित्र खरा है (पद ४)।

छ. हमारे पास आशा है (पद ४,५)।

ज. हमारे पास प्रेम है (पद ५)।

झ. हमारे पास पवित्र आत्मा है (पद ५)।

चर्चा का बिंदु

रोमियों ५:१-५ के अपने अध्ययन के सम्बन्ध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और उन पर चर्चा करें।
शान्ति में आनन्द और विश्राम है। आनन्द में शान्ति का नृत्य है।

टिप्पणियाँ —

V. १ और २ कुरिन्थियों की पुस्तकें।

क. १ कुरिन्थियों।

१. १ कुरिन्थियों की सामान्य रूपरेखा।

क. यह स्पष्ट है कि १ कुरिन्थियों एक ऐसी पत्री है जो उन पत्रों के उत्तर में लिखी गयी थी जो कुरिन्थियों ने पौलुस को भेजे थे। स्वाभाविक है, कि इन पत्रों ने कलीसिया के भीतर विभिन्न समस्याओं का उल्लेख किया। पौलुस इन समस्याओं का उत्तर अपनी पत्री में देते हैं।

ख. पत्री के उन विभिन्न खंडों पर ध्यान दें जो शब्दों द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं: "उन बातों के विषय में ..."

१) १ कुरिन्थियों ७:१ - उन बातों के विषय में (विवाह)।

२) १ कुरिन्थियों ७:२५- उन बातों के विषय में (कुंवारियों और विधवाओं)।

३) १ कुरिन्थियों ८:१,४ - उन बातों के विषय में (मूर्तियों के सामने बलि किया हुआ भोजन)

४) १ कुरिन्थियों १२:१ - उन बातों के विषय में (आत्मिक वरदान)।

५) १ कुरिन्थियों १६:१ - उन बातों के विषय में (पवित्र लोगों के लिए चंदा)।

६) १ कुरिन्थियों १६:१२- उन बातों के विषय में (अपुल्लोस)।

२. १ कुरिन्थियों का मुख्य विषय।

क. इस पत्री को कलीसिया के जीवन में पायी जाने वाली त्रुटियों को ठीक करने और विशिष्ट विषयों से सम्बंधित सुझाव देने के लिए लिखा गया था।

ख. हम सही की गई त्रुटियों को सूचीबद्ध करके पुस्तक की एक सामान्य रूपरेखा को तैयार कर सकते हैं।

१) कलीसिया के भीतर विभाजन की त्रुटि (१ कुरिन्थियों १:१०-३१; ३:१-८)।

२) सेवकों और सेवकाई की झूठी धारणा की त्रुटि (१ कुरिन्थियों ३:१-४:२१)।

३) कलीसिया को अनैतिकता, मुकदमों और कामुकता से शुद्ध न करने की त्रुटि (१ कुरिन्थियों ५:१-६:२०)।

टिप्पणियाँ —

४) विवाह और यौन सम्बन्ध के बारे में सुझाव (१ कुरिन्थियों ७:१-४०)।

५) अपने अधिकारों की मांग करने की त्रुटि (१ कुरिन्थियों ८:१-९:२७; १०:२३-३३)।

६) प्रभु भोज में संसार से अलगाव की कमी, फूट और पक्षपात की त्रुटि (१ कुरिन्थियों १०:१६-२१; ११:१७-३४)।

७) मसीही व्यवस्था से सम्बंधित सुझाव (१ कुरिन्थियों ११:१-१६)।.

८) आत्मिक वरदानों के प्रयोग से सम्बंधित सुझाव (१ कुरिन्थियों १२:१-१४:४०)।

ख. २ कुरिन्थियों।

१. पत्री का स्वरूप।

क. यह पौलुस की सबसे व्यक्तिगत पत्रियों में से एक है। वह इस पत्र में बहुत पारदर्शी हैं क्योंकि वह अपने स्वयं की सेवकाई के उद्देश्यों, लक्ष्यों, विधियों और वैधता पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

ख. निम्नलिखित पदों की ओर ध्यान दें, कि पौलुस किस प्रकार अपनी प्रेरिताई को अस्वीकार होने पर वह चिंतित प्रतीत होते हैं।

१) २ कुरिन्थियों ३:१ (क्या हमें सिफारिशों की आवश्यकता है?)

२) २ कुरिन्थियों ५:१२ (हम आपको अपने कार्य के बारे में बताएंगे।)

३) २ कुरिन्थियों ७:२ (हमने किसी से अन्याय नहीं किया।)

४) २ कुरिन्थियों १०:२,३ (हम पर शरीर के अनुसार चलनेवालों का आरोप लगाया गया था।)

५) २ कुरिन्थियों ११:५,६ (मैं इन झूठे प्रेरितों से कम नहीं हूँ।)

६) २ कुरिन्थियों १२:११ (झूठे प्रेरितों के कारण मैं घमण्ड करने को विवश हुआ।)

७) २ कुरिन्थियों १३:३ (तुम मेरे द्वारा मसीह के बोलने का प्रमाण चाहते हो।)

टिप्पणियाँ —

२. अपनी स्वयं की सेवकाई और इसकी विशेषताओं और वैधता पर इस ध्यान के बीच में, पौलुस उदारता के महत्व के विषय में एक महत्वपूर्ण खंड दर्शाते हैं।

क. २ कुरिन्थियों अध्याय ८ और ९ की समीक्षा करें। विशेष रूप से २ कुरिन्थियों ८:१२-१५ पर ध्यान दें।

ख. प्रेरितों के काम २:४४,४५ और प्रेरितों के काम ४:३२-३७ की समीक्षा करें।

चर्चा का बिंदु

२ कुरिन्थियों ८ और ९, और प्रेरितों के काम २ ओर ४ के अनुच्छेदों के आधार पर, मसीही सहभागिता और मसीही समानता की अवधारणाओं पर चर्चा करें।

VI. गलातियों की पुस्तक।

क. गलातियों की सामान्य रूपरेखा।

१. इसका मुख्य विषय स्वतंत्रता और बाध्यता के बीच का सम्बन्ध है।

२. गलातियों की सामान्य रूपरेखा।

क. पिछली समस्याओं का आलेख (अध्याय १-२)।

ख. स्वतंत्रता का धर्मशास्त्र (अध्याय ३-४)।

ग. बाध्यता की नैतिकता (अध्याय ५-६)।

३. स्वतंत्रता से बाध्यता की ओर बढ़ना।

क. स्वतंत्रता को दायित्व से पहले होना चाहिए जैसे की प्रतिज्ञा आज्ञा से पहले होती है।

ख. स्वतंत्रता हमें बाध्य होने में सक्षम बनाती है (प्रतिज्ञा हमें आज्ञा मानने में सक्षम बनाती है)।

टिप्पणियाँ —

ग. परमेश्वर आज्ञा देते हैं, लेकिन वह हमेशा ऐसी प्रतिज्ञा करते हैं जो हमें आज्ञाओं को पूरा करने में सक्षम बनाती है। जब तक परमेश्वर हमें किसी कार्य को करने की क्षमता प्रदान नहीं करते तब तक वह हमें कभी भी कुछ करने के लिए नहीं कहते (उदाहरण के लिए, १ कुरिन्थियों १०:१३ का सिद्धांत देखें)। परमेश्वर हमसे जो कुछभी मांगते हैं, उसके लिए हमेशा एक प्रावधान अवश्य करते हैं।

घ. बाध्यता के प्रति स्वतंत्रता की ओर इस प्रकार बढ़ना आवश्यक है क्योंकि परमेश्वर सभी चीज़ों के स्त्रोत और ईश्वरीय है। हमारी बाध्यता दायित्व परमेश्वर के प्रावधान से शुरू होनी चाहिए।

४. स्वतंत्रता और बाध्यता की इन अवधारणाओं को सम्पूर्ण बाइबल में विभिन्न तरीकों से दर्शाया गया है। प्रत्येक मामले में, दो अवधारणाओं को महत्वपूर्ण रूप से जुड़ा हुआ दिखाया गया है। एक के बिना दूसरा सम्भव नहीं है। वे एक साथ पाए जाते हैं और परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

क. बाध्यता के बिना कोई स्वतंत्रता नहीं है।

ख. स्वतंत्रता के बिना कोई बाध्यता नहीं है।

चर्चा का बिंदु

स्वतंत्रता और बाध्यता से सम्बंधित चर्चा को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित आरेख का प्रयोग करें। छात्रों को अपने जीवन का अनुप्रयोग करने के लिए कहें।

दो अवधारणाओं के लिए अनुच्छेद और उनका स्थान	सम्बन्ध के मुख्य शब्द	वे तरीके जिनसे दोनों अवधारणाएं एक दूसरे से संबंधित हैं
गलतियों स्वतंत्रता (अध्याय ३ और ४), बाध्यता (अध्याय ५ और ६)	स्वतंत्रता बाध्यता	स्वतंत्रता का अस्तित्व हमें बाध्यता को पूरा करने में सक्षम बनाता है... बाध्यता का अस्तित्व हमें स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है।
मत्ती ५:१७ अनुग्रह (हमारे अन्दर परमेश्वर), व्यवस्था (हम में पूरी हुई)	अनुग्रह व्यवस्था	अनुग्रह का अस्तित्व हमें व्यवस्था को बनाए रखने में सक्षम बनाता है... व्यवस्था का अस्तित्व हमें अनुग्रह प्राप्त करने की ओर ले जाता है
इफिसियों विशेषाधिकार (अध्याय १-३), ज़िम्मेदारी (अध्याय ४-६)	विशेषाधिकार ज़िम्मेदारी	विशेषाधिकार का अस्तित्व हमें जिम्मेदारी को पूरा करने में सक्षम बनाता है... जिम्मेदारी का अस्तित्व हमें विशेषाधिकार का उपयोग करने के लिए प्रेरित करता है।
अब्राहम की वाचा उत्पत्ति १२:१-३ १/२ प्रतिज्ञाएँ (पद २), १/२ आज्ञाएँ (पद २,३)	प्रतिज्ञा आज्ञा	प्रतिज्ञा का अस्तित्व हमें आज्ञा का पालन करने में सक्षम बनाता है... आज्ञा के अस्तित्व के लिए यह आवश्यक है कि हमें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु प्राप्त हो।
प्रेरितों के काम १:८ प्रावधान (पवित्र आत्मा), सेवकाई (यरूशलेम से पृथ्वी की छोर तक)	प्रावधान सेवकाई	प्रावधान का अस्तित्व हमें सेवकाई को पूरा करने में सक्षम बनाता है... सेवकाई का अस्तित्व मांग करता है कि हम प्रावधान को प्राप्त करें।

टिप्पणियाँ —

ख. आत्मा का फल (गलातियों ५:२२,२३)।

१. मसीही व्यवस्था की आवश्यकताओं पर विजयी रूप से जी सकते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह व्यवस्था के अनुसार नहीं चलता। इसका अर्थ है कि वह व्यवस्था को बनाये रखने में सक्षम है।

क. आत्मा का फल व्यवस्था के ऊपर हमारे जीने का एक प्रमाण है। जैसे पौलुस ने कहा, "ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं।" इस प्रकार से जीना आत्मा के अधिकार और अनुग्रह में हमारी वृद्धि का प्रमाण है।

ख. कहने का तात्पर्य यह है कि एक आत्मा द्वारा संचालित जीवन को एक धर्मी (उचित) जीवन जीने के लिए व्यवस्था की आवश्यकता नहीं होती है।

२. मसीही जीवन में आत्मा के फल की विशेषता होनी चाहिए।

क. **प्रेम** मसीही जीवन का केंद्रीय विषय होना चाहिए।

ख. **आनन्द** इसकी ताकत होनी चाहिए।

ग. **शान्ति** इसका आत्मविश्वास होनी चाहिए।

घ. **धीरज** इसकी सहनशक्ति होना चाहिए।

ङ. **दया** इसकी गवाही होनी चाहिए।

च. **भलाई** उसका आचरण होना चाहिए।

छ. **विश्वास** परमेश्वर के प्रति प्रतिक्रिया होनी चाहिए।

ज. **नम्रता** इसका चाल-चलन होना चाहिए।

झ. **संयम** इसकी परिपक्वता होनी चाहिए।

टिप्पणियाँ —

VII. १ और २ थिस्सलुनीकियों की पुस्तकें।

क. दोनों पुस्तकों की रूपरेखा।

१. तीमुथियुस द्वारा थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के विषय में एक विवरण लाने के बाद पौलुस ने १थिस्सलुनीकियों को लिखा (१थिस्सलुनीकियों ३:६ को देखें)।

२. पौलुस ने २ थिस्सलुनीकियों, यीशु के दूसरे आगमन के सम्बन्ध में थिस्सलुनीकियों की कलीसिया में पाए जानेवाले भ्रम का उत्तर देने के लिए लिखा (पौलुस ने आरम्भ में १थिस्सलुनीकियों ४:१३-५:११ में समस्या को संबोधित किया)।

ख. पुस्तकों के प्रमुख विषय।

१. उदाहरण और अनुकरण (१ थिस्सलुनीकियों १:५,६; २:१४; २ थिस्सलुनीकियों ३:६-९)।

२. आलसी लोगों के लिए अनुशासन (१ थिस्सलुनीकियों ५:१४; २ थिस्सलुनीकियों ३:१०-१५)।

३. मसीह की वापसी (१ थिस्सलुनीकियों ४:१३-५:११; २ थिस्सलुनीकियों २)।

४. उत्पीड़न में धीरज और प्रोत्साहन (१ थिस्सलुनीकियों १:६; २:१४-१६; १:३-१२)।

५. सुसमाचार का प्रचार (१ थिस्सलुनीकियों १:८; २:९; २ थिस्सलुनीकियों ३:१)।

पाठ्यक्रम का निष्कर्ष:

यहाँ पर नए नियम II का समापन होता है, जिसने नए नियम की कलीसिया के जन्म के सम्बन्ध में कई विषयों का सर्वेक्षण किया। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, पवित्र आत्मा की सामर्थ्य और सुसमाचार के प्रचार पर बल दिया गया है। पौलुस के जीवन के एक अध्ययन ने मसीह के साथ, परिवर्तन से पहले और बाद में उसके जीवन की समीक्षा की। रोमियों में, विश्वास द्वारा न्याय पर बल दिया गया था। १ और २ कुरिन्थियों में, हमने देखा कि पौलुस ने कुरिन्थियों की कलीसिया की समस्याओं का उत्तर दिया, फिर अपने प्रेरितत्व का बचाव किया। गलातियों में, स्वतंत्रता और बाध्यता के विषयों, और आत्मा के फल पर बल दिया गया था। १ और २ थिस्सलुनीकियों में, हमने देखा कि पौलुस ने उदाहरण, अनुकरण, प्रोत्साहन और धीरज पर बल दिया, फिर मसीह के दूसरे आगमन के सम्बन्ध में भ्रम के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की।

इस श्रृंखला का अगला पाठ्यक्रम, नया नियम III, कलीसिया की बढ़ोतरी का सर्वेक्षण करता है।